आज की मुरली का सार -- Date: 28-05-2014

बाबा ने आज कहा, संगम पर बाप तुम्हें ऐसी श्रीमत् देते हैं जो 21 पीढ़ी तक चलती हैं और सब आत्माये सदागति में हैं इसलिए वहाँ गुरु की भी दरकार नहीं हैं.

बाबा ऐसी कोन सी श्रीमत् देते हैं जो हम आत्माये 21 जन्म तक फोलो करते हैं?

1. बाबा ने हमें सबसे पहेली श्रीमत् दी हैं, स्वयं को आत्मा समझे और आत्म अभिमानी बने. हम बच्चे यहॉ आत्म अभिमानी रहने की प्रैक्टिस करते हैं वहाँ स्वर्ग में 21 जन्म हम देवी-देवताये नेचरल रुप से आत्म अभिमानी हो कर रहते हैं.

2. बाबा ने हमें दूसरी श्रीमत् दी हैं, संपूर्ण पवित्रता धारण करो. हम बच्चे यहॉ पुरुषार्थ कर मन-वचन-कर्म से संपूर्ण पवित्र रहने की प्रैक्टिस करते हैं वहाँ स्वर्ग में 21 जन्म हम देवी-देवताये नेचरल रुप से पवित्र हो कर रहते हैं. वहाँ स्वर्ग में बच्चे भी योगबल से पैदा होते हैं. इसी पर गायन हैं देवी-देवताये सोले कला संपूर्ण पवित्र रहते हैं.

3. बाबा ने हमें तीसरी श्रीमत् दी हैं, दैवी-गुणों धारण करो. बाबा ने समझाया हैं की हम आत्माओं में देवी-गुण तब इमर्ज होंगे, जब हम किसी भी अन्य आत्मा को या प्रकृति के पांच तत्वों को हमारे मन-वचन-कर्म से दुख नहीं देंगे. हम अपना कर्मों का चार्ट भी इसी लिए रखते हैं की चेक करें की आज हमने किसी भी अन्य आत्मा को या प्रकृति को अपने मन-वचन-कर्म से दुख तो नहीं दिया. अगर हम इसी पर पुरुषार्थ करते हैं तो हमारी आत्मा निर्विकारि बनती जाती हैं. निर्विकारि आत्माये दूसरों के गुण ही देखते हैं और दूसरों से गुण ही ग्रहण करते हैं. तो हम आत्माओं का यहीं पुरुषार्थ हमें सर्वगुण सम्पन्न बना देगा. जो फिर 21 जन्म हम देवी-देवतायें नेचरल रुप से सर्वगुण सम्पन्न रहते हैं.

ऐसी सोले कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारि और सर्वगुण सम्पन्न देवी-देयताओं की आत्माये 21 जन्म सुख और शांति में रहती हैं यानी सद्गति में रहती हैं तो फिर भला वहाँ कोई गुरु क्यों करेगा.

ॐ शांति.